

जीवन : आज का उत्सव है कल पर मत टालो आज का उत्सव

निरन्तर आनन्द का सृजन

सृजन कभी कल में नहीं होता, वह हमेशा आज में घट रहा होता है। स्वयं जीवन भी भविष्य की घटना नहीं, बल्कि आज की सांसों में घट रहा है।

जीवन एक उत्सव है। जीवन से अधिक महत्वपूर्ण कुछ नहीं है, और जीवन रोज़ खर्च हो रहा होता है। फिर भी एक विचित्र विरोधाभास में हम सब फंसे हुए हैं। हम अच्छी वस्तुओं को 'किसी विशेष दिन', 'किसी खास अवसर' या 'भविष्य की ज़रूरत' के लिए बचाकर रख देते हैं।

कई बार तो ऐसा भी होता है कि अलमारी में चीज़ें बंद रह जाती हैं और उनका उपयोग करने वाले बड़े हो जाते हैं। जैसे कोई सुंदर सी गुड़िया डिब्बे में बंद करके अलमारी में रख दी गई और बच्चे को उससे खेलने नहीं दिया गया कि वह खेल-खेल कर उसे नष्ट कर देगी। गुड़िया तो अलमारी में ही रह गई और बच्ची बड़ी हो गई। वह कभी उस गुड़िया से खेल ही नहीं पाई, जिसके लिए वह खरीदी गई थी।

जिसके लिए गुड़िया लाई गई, उसी को उससे खेलने का अवसर नहीं मिला, ऐसे ही कितने डिनर सेट, वस्त्र और उपयोगी वस्तुएं अलमारी के अन्दर बन्द रह जाती हैं, इस प्रतीक्षा में कि कोई अच्छा दिन आएगा, जिस दिन उनका प्रयोग किया जाएगा।

सुंदर, महंगी एवं आकर्षक वस्तुएं, जिन्हें हमने बहुत सोच-विचार कर खरीदा है, उन्हें अलमारी के तहखाने में रख देने के पीछे कई मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक कारण भी होते हैं। पहला कारण है कमी

का डर। हमारे भीतर कहीं यह भावना बैठी होती है कि अच्छी चीज़ें, महंगी चीज़ें सामान्य प्रयोग से जल्दी खराब या खत्म हो जाएंगी, इसलिए उन्हें बचाकर रखना चाहिए। यह सोच अक्सर उन पीढ़ियों से आती है जिन्होंने अभाव देखा है।

दूसरा कारण है 'विशेष समय' की प्रतीक्षा। हम सोचते हैं कि अभी सामान्य दिन है, किसी खास अवसर पर ही इन चीज़ों का उपयोग करेंगे। लेकिन जीवन का सच यह है कि अधिकांश दिन विशेष ही होते हैं और यदि हम प्रतीक्षा करते रहे तो वह 'खास दिन' कभी आता ही नहीं।

तीसरा कारण है अवचेतन में स्वयं को उस आनंद के योग्य न मानना। कई बार व्यक्ति सोचता है कि अभी मैं इतना योग्य या सफल नहीं कि इन अच्छी वस्तुओं का उपयोग करूं, इतनी उच्च सफलता को प्राप्त करूं। इसलिए वह उन्हें भविष्य के अपने बेहतर रूप के लिए सुरक्षित रखता है।

परंतु ऐसा करते हुए हम अपने भीतर छिपी एक विशेष शक्ति को अवरुद्ध कर रहे होते हैं। वह शक्ति है इच्छा शक्ति और यही शक्ति सृजन की जननी है। इच्छा ही घनीभूत होकर आवश्यकता का रूप लेती है और आवश्यकता हर स्थिति में आविष्कार की जननी बनती है।

हम सबके अंदर तीन प्रकार की शक्तियां कार्य कर रही हैं - इच्छा की शक्ति, ज्ञान की शक्ति एवं क्रिया की शक्ति। इन तीनों शक्तियों के यथोचित संयोग से सृजन होता है। जीवन का उद्देश्य प्रायः सबको भ्रम में डाल देता है। कई बार चलते-फिरते अचानक मन में यह प्रश्न उठ जाता है कि इस जीवन का लक्ष्य क्या है?

एक वाक्य में कहा जाए तो जीवन का लक्ष्य सृजन करना है। हम सब स्वयं सृजन की परिणति हैं और हमारा उद्देश्य है कि हम इस जीवन में कुछ नया रचें, इस संसार को उन्नति और श्रेष्ठता की ओर ले जाएं। सृजन करने के लिए हमें ऊर्जा या शक्ति की आवश्यकता होती है।

शक्तिविहीन व्यक्ति भला क्या सृजन करेगा और जीवन को कैसे परिवर्तित करेगा? इसलिए प्रत्येक प्राणी में सृष्टि ने तीन प्रकार की विशेष शक्तियां प्रदान की हैं।

ऊर्जा या शक्ति का वास्तविक अर्थ क्या है? शक्ति तीन प्रकार की है - इच्छा, ज्ञान और क्रिया। और यही उनका स्वाभाविक क्रम भी है। इच्छा एक तरंग है जो शांति में हलचल उत्पन्न करती है। यह हलचल या व्यवधान जीवन में आवश्यक है, क्योंकि जब तक

इच्छा नहीं होगी, तब तक सृजन कैसे होगा?

इच्छा के बाद आवश्यक है ज्ञान, वह शक्ति जो इच्छा को दिशा देती है और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। और अंत में आती है क्रिया, क्योंकि जब तक हम कुछ करेंगे नहीं, हमारी इच्छा केवल प्रतीक्षा करती रहेगी। उस दिन की, जब वह फलित और विकसित हो सके, तथा हम जीवन में कुछ नया सृजन कर सकें।

सृजन कभी कल में नहीं होता, वह हमेशा आज में घट रहा होता है। स्वयं जीवन भी भविष्य की घटना नहीं, बल्कि आज की सांसों में घट रहा है।

यदि अच्छी वस्तुएं अलमारी में बंद रह जाएं और जीवन बीत जाए, तो वस्तु तो बच जाती है, पर जीवन का आनंद छूट जाता है।

असली बुद्धिमत्ता यह है कि हम जीवन के प्रत्येक दिन को भी सुंदर बनाना सीखें। अच्छे कपड़े, अच्छी खुशबू, अच्छे बर्तन, अच्छे शब्द, अच्छा मन, अच्छाभाव ये सब जीवन को उत्सव बनाते हैं।

शायद प्रश्न यह नहीं कि वस्तु को कब उपयोग करें, बल्कि यह है क्या हम अपने जीवन को अभी, इसी क्षण, उत्सव मानने को तैयार हैं?

चिन्तन मनुष्य के जीवन का एक अत्यंत आवश्यक और श्रेष्ठ गुण है, क्योंकि यही उसे पशु से भिन्न बनाता है। जब मनुष्य अपने बीते हुए अनुभवों पर शांत मन से विचार करता है, तो वह उनसे सीख लेकर अपने भविष्य को अधिक सुदृढ़ और सफल बना सकता है। ऐसा सकारात्मक चिन्तन वर्तमान को आनंदमय और संतुलित बना देता है। परन्तु जब यही चिन्तन अनियंत्रित होकर 'चिन्ता' का रूप धारण कर लेता है, तब वह मन को अशांत, भयग्रस्त और दुखी बना देता है। चिन्ता व्यक्ति की ऊर्जा को क्षीण कर देती है और उसे वर्तमान के सुख से वंचित कर देती है।

जीवन का वास्तविक सौंदर्य वर्तमान क्षण में ही निहित है, क्योंकि भूतकाल बीत चुका है और भविष्य अभी आया नहीं है। यदि मनुष्य निरंतर अतीत की गलतियों या भविष्य की आशंकाओं में उलझा रहता है, तो वह अपने आज को खो देता है। इसलिए आवश्यक है कि हम भूत से सीखें, भविष्य के लिए योजना बनाएं, परन्तु अपना जीवन पूर्णतः वर्तमान में जीएं। यही संतुलन जीवन को सार्थक, शांत और आनंदपूर्ण बनाता है।